International Journal of Sanskrit Research 2023; 9(6): 254-256

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2023; 9(6): 254-256
© 2023 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 09-09-2023
Accepted: 14-10-2023

डॉ. अवधेश कुमार
अस्सिटेन्ट प्रोफेसर, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, मैदान गढ़ी, दिल्ली, भारत

Corresponding Author:
डॉ. अवधेश कुमार
अस्सिटेन्ट प्रोफेसर, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, मैदान गढ़ी, दिल्ली, भारत

अष्टाध्यायी के "इको झल्" सूत्र का विश्लेषण

डॉ. अवधेश कुमार

प्रस्तावना

इग्ग्रहणं कृतेधातोः विशेषणस्य वा भवेत्।

इक् का ग्रहण धातु के लिए होना चाहिए अथवा विशेषण के लिए होना चाहिए। क्या यहाँ विशेष है- लक्षणप्रतिपदोक्तयोः प्रतिपदोक्तस्यैव ग्रहणम्[1] इस प्रकार के नियम रहते आदादिक इक् स्मरणे धातु का ही ग्रहण होता है । और यदि 'इक्' ग्रहण विशेषण के लिए है तब सविशेषण धातु का ग्रहण होना चाहिए।

अत उत्तरं पठति।
आदेशाद्धिगमेर्नार्थः सन्त्वाद् धातुविशेषणम् ।

इसलिए उत्तर पढ़ते है। सन् के परे रहते इक् के स्थान पर गम् का आदेश होता है। सनि च[2] इण्वदिकः इस प्रकार वचन प्राप्त होने पर इक् से इक् धातु के ग्रहण करने में कोई प्रयोजन नहीं है। किं तर्हि।

तो क्या है। ऊपर सूत्र से 'सन्' का अनुवर्त्तन होने से धातु का आक्षेप किया जाता है। इस कारण से इक् द्वारा धातु विशेषित होता है। और इक् को धातुविशेषण बना लिये जाने पर तदन्तविधि का लाभ होता है। जिससे इन सब उदाहरणों की सिद्धि हो जाए। चिचीषति। तुष्टूषति[3]।

अस्तु। इगन्त धातु से परे झलादि सन् का कित्त्व विधान करने में क्या प्रयोजन है।

इकः कित्त्वं गुणो मा भूत्[4]

इगन्त धातु से परे झलादि सन् को कित्व कहा जाता है, इसलिए कि चिचीषति तुष्टूषति में गुण न हो जाए।

इसमें कोई प्रयोजन नहीं दिखता है क्योंकि दीर्घारम्भात्[5] अज्झनगमां सनि [6] से किया गया दीर्घत्व का विधान सामर्थ्य से चिचीषति तुष्टूषति इत्यादि में गुण का बाधक हो जायेगा। क्योंकि युगपत् दीर्घ एवं गुण की प्राप्ति होने पर परत्वनियमतः गुण की प्राप्ति होती है। पुनः सन् के परे रहते अजन्त अङ्ग को दीर्घ प्राप्त नहीं होता है। तो दीर्घ विधान करना ही व्यर्थ हो जायेगा। अतः दीर्घारम्भ की सामर्थ्य से यहाँ गुण बाधित होता है।

कृते भवेत्[7]। ननु पुनः प्रसङ्गविज्ञानात् इति कृते खलु दीर्घत्वे गुणः प्राप्नोति। अच्छा! इस परिभाषा की प्रवृत्ति से दीर्घ करने पर गुण की प्राप्ति होती है। इसकी अवधारणा भी शास्त्रों में है।

अनर्थकं तु[8]।

दीर्घ के होने पर पुनः गुण हो जावे तो दीर्घत्व का विधान अनर्थक ही समझना चाहिए।

नार्थकम् अवगच्छ। किं तर्हि। ह्रस्वार्थम् [9]।

अनर्थक नहीं समझना चाहिए। तो फिर क्या समझना चाहिए। ह्रस्व धातु के प्रसङ्ग में दीर्घवचन सामर्थ्य से गुण नहीं होता है।
मत होवे।

दीर्घाणां तु प्रसज्यते[10]

परन्तु दीर्घ धातुओं को गुण प्राप्त होगा। ऐसा नहीं है। दीर्घ धातुओं को भी गुण नहीं होता है दीर्घवचन सामर्थ्य से। क्योंकि दीर्घ धातुओं को दीर्घ नहीं होता है जैसे लोक में देखते हैं कि भरपेट भोजन किया हुआ व्यक्ति फिर नहीं खाता है। वैसे दीर्घ को दीर्घ करने में कोई प्राप्त करने योग्य प्राप्त फल नहीं है। अतः दीर्घ विधायक सूत्र अज्झनगमां सनि[11] की प्रवृत्ति नहीं होती है।

सामर्थ्याद्धि पुनर्भाव्यम्[12]।

ऐसी बात नहीं है क्योंकि सामर्थ्य विशेष, भोजन विशेष या शिल्पि विशेष होने से लोक में पुनः प्रवृत्ति देखी जाती है। तद्वत् यहाँ शास्त्र में नहीं है क्योंकि अकृतकारि खल्वपि शास्त्रमग्निवत् अर्थात् शास्त्र अग्नि के समान जहाँ कार्य नहीं हुआ है, वहाँ करने वाला अकृतकारी होता है। जैसे कि देखा जाता है "जो जला हुआ पदार्थ नहीं है, उसे ही अग्नि जलाता है" वैसे ही जहाँ दीर्घ नहीं है, वहीं पर दीर्घविधायक शास्त्र की प्रवृत्ति होती है। और यदि आप ये कहे कि दीर्घों के दीर्घ करने में यह एक प्रयोजन है कि गुण न होवे क्योंकि शास्त्र बादल के समान कृतकारी भी होता है "कृतकारी खल्वपि शास्त्र पर्जन्यवत्" जैसे बादल मरुस्थल में और समुद्र में भी बरसता है इसी प्रकार शास्त्र की प्रवृत्ति देखी जाती है कि जहाँ दीर्घ है और जहाँ दीर्घ नहीं है वहाँ भी, सर्वत्र दीर्घ का विधान होता है।

आपका अभिमत ऐसा है तो जैसे दीर्घ वचन से गुण नहीं हुआ वैसे ही दीर्घवचन सामर्थ्य से "ऋत इद् धातोः" [13] सूत्र की प्रवृत्ति चिकीर्षति जिहीर्षति में नहीं होगी।

ऋदित्वं दीर्घसंश्रयम्[14]।

ऋकार को अवश्य दीर्घ न करने पर इत्व की प्राप्ति नहीं होती। क्या कारण है? ऋत ॰ अष्टा -7.1.100 सूत्र में ऐसा दीर्घ निर्देश किया है। माना कि ह्रस्वों को दीर्घ किये बिना ऋकार को इत्व नहीं होता है परन्तु दीर्घ को दीर्घ किये बिना ऋकार को इत्व प्राप्त होता है। इसलिए दोष आयेगा सो ठीक नहीं है।

दीर्घाणां नाकृते दीर्घ[15]

दीर्घ को दीर्घ किये बिना ऋकार को इत्व नहीं हो पायेगा परत्व से गुण के होने से। जब दीर्घ को भी दीर्घ विधान से गुण की बाधा होगी तब उसके पश्चात् ऋकार को इत्व की प्राप्ति रहेगी अन्यथा परत्व से गुण होगा। अतः कित्वं का प्रयोजन यही उचित लगता है। ज्ञीप्सति में णिलोप जिससे हो जाए। णिलोपस्तु प्रयोजनम् [16]
अङ्ग क्वास्ताः क्व निपतिताः। अरे! कहाँ फैंके गये, कहाँ जा गिरे? कहाँ सन् को कित् करना और कहाँ णि का लोप होना। इन दोनों का परस्पर क्या घनिष्ठ सम्बन्ध है। कित् के रहते णिलोप होवे और कित् के न होने पर णि का लोप न होवे।
सन्तिवैदेवाः परोक्षप्रियाः। अरेः भाई देवता परोक्ष में ही प्रिय होते हैं । कुछ व्यवहार का सम्बन्ध सीधा न होकर पारम्परिक सम्बन्ध होता है। ठीक ऐसे ही णिलोप के प्रति कित्त्व करने और न करने में सम्बन्ध समझना चाहिए। वह कैसे। चिचीषति में सन् के कित्त्व होने पर सावकाश दीर्घ को परत्वनियमतः णिलोप व्यवधायी होगा और कित्त्व न करने पर जैसे दीर्घ गुण का बाधक होता है वैसे ज्ञ+स इस अवस्था में णिलोप का भी बाधक होगा। क्योंकि गुण के समान णि लोप का भी अन्यत्र अवकाश है। कारणा हारणा अर्थात् कारि+ल्युट् हारि+ल्युट् इस अवस्था में णिलोप सावकाश है और चिचीषति तुष्टूषति में दीर्घ सावकाश है तथा दोनों णिलोप एवं दीर्घ के युगपत् सावकाश होने से ज्ञपि+स+अति इस लक्ष्य में परत्व नियम की प्राप्ति होकर णिलोप हो जाता है। अच्छा तो दीर्घ सावकाश हो जाए। इसलिए कित्त्व कहना चाहिए। असत्यपि कित्त्वे सावकाशं दीर्घत्वम्। ऐसी बात नहीं है क्योंकि कित्त्व के न होने पर भी सावकाश दीर्घ देखा जाता है। कहाँ अवकाश है। इस् भाव करने में। क्र्यादिगण की मीञ् हिसायाम् और स्वादिगण की डुमिञ्

प्रेक्षपणे धातु को सन् के परे रहते दीर्घ कर लेने पर इस विधायक सनि मीमाघु ०[17] में मी के ग्रहण से दोनों धातुओं का ग्रहण हो जाए जिससे निमित्सति प्रमित्सति सिद्ध होवें। फिर तो कित्व के विधान न होने पर जैसे सावकाश दीर्घ को णिलोप बाधता है। वैसे ही गुण भी सजातीय परत्व नियम से सावकाश दीर्घ का बाधक होगा। अतः आपको ये कहना ही पड़ेगा कि णिलोपस्तु प्रयोजनम् अर्थात् णिलोप के प्रति कित्त्व विधान होता है और यही कित्त्व करने में प्रयोजन है। सूत्र में झल् पाठ क्यों किया है। अनिट् पाठ्येत कस्मान्न।

सूत्र में झल् के स्थान पर अनिट् पाठ क्यों नहीं पढ़ना चाहिए जबकि झलादि सन् कहने से अनिट् सन् हि गृहीत होता है। एक वर्ण के लिए प्रत्याहार ग्रहण करना व्यर्थ है। इसलिए उत्तर पढ़ते हैं-

जातौ झल् अर्थात् जाति में झल् ग्रहण करना चरितार्थ है तथा उत्तरं च तत् और पर सूत्रों में उसे व्यक्तिमान् झल् का ग्रहण समझना चाहिए। इससे प्रकृत सूत्र में प्रत्याहार ग्रहण करने में भी कोई दोष नहीं है। अस्तु।

पृथक् योगः किमर्थो वै। योग विभाग किस लिए किया है। जबकि हलन्तादिको झल् ऐसा एक योग से हि सारे कार्य सिद्ध हो जाते हैं।

इकः कित्त्वम्

इक् से परे सन् का कित्त्व हो जावे। तू मा भवेत् मत् होवे। इक् से परे सन् को कित्त्व। तो फिर सावकाश दीर्घ को परत्त्व से गुण बाधेगा। ऐसा होने से चिचीषति तुष्टूषति आदि में सर्वत्र गुण होने लगेगा। ऐसी बात नहीं है। कही पर भी दीर्घ सावकाश नहीं दिखाई देता है। जो थे कहे कि प्रमित्सति अर्थात् प्र+मि+स इस स्थिति में- दीर्घ सावकाश है। सो ठीक नहीं है। यहाँ भी गुण की प्राप्ति है। अतः उत्तर पढ़ते हैं-

नाप्राप्ते तु गुणे दीर्घः।

गुण की अवश्य प्राप्ति में दीर्घ विधान किया है और जिसके अवश्य प्राप्त में जो विधि विधान किया जाता है वह विधि अवश्य ही बाधक होती है। येन नाप्राप्ते यो विधिराभ्यते स तस्य बाधको भवति।

अथवा जिसकी जैसे इष्टि है वैसी उसकी व्यवस्था देखी जाती है। इष्टतो व्यवस्था। विप्रतिषेध सूत्र में परवचन से प्रायिक व्यवस्था समझी जाती है और कहीं-कहीं पर इष्ट होने से वर्ण श्लेष अथवा अर्थश्लेष की अवधारणा देखी जाती है पदों में। जैसे विप्रतिषेधेऽपरं कार्यम्। परशब्दः इष्टवाची। इसलिए दीर्घ के प्रसंग में सर्वत्र गुण बाधित हो जायेगा।

तो फिर जैसे अनवकाश दीर्घ सर्वत्र गुण का बाधक होता है वैसे ही णिलोप का भी बाधक होगा। अतः कहना पड़ेगा कि इक् से परे सन् कित्वत् होता है जिससे ज्ञीप्सति में णिलोप हो जाए। णिलोपस्तु प्रयोजनम्। नैतदस्ति प्रयोजनम्। यह भी प्रयोजन नहीं है। विना कित्त्व के णिलोप सिद्ध है-

णिलोपोबलियान् भवेत्

सभी विधियों में लोप विधि बलवान् होती है सर्वविधिभ्यो लोपविधिबंलियान्। भूतपूर्व नियम होने से ज्ञीप्सति में णिलोप दीर्घ का बाधक हो जायेगा लोप बलवान् होने से। तस्माद्योगविभागो न वक्तव्य। उस हेतु से पृथक् योग विभाग करने की आवश्यकता नहीं है। एक सूत्र रखना ही उचित है। हलान्तादिको झल्।।1.2.8।।

इग्ग्रहणं कृते धातोर्विशेषणस्य वा भवेत्।
आदेशाद्धि गमेर्नार्थः सन्त्वाद् धातुविशेषणम्।।1।।

इकः कित्त्वं गुणो मा भूव् दीर्घारम्भात् कृते भवेत्।
अनर्थकं तु ह्रस्वार्थं दीर्घाणां तु प्रसज्यवे।।2।।[18]

सामर्थ्याद्धि पुनर्भाव्यमृदित्त्वं दीर्घसंश्रयम्।
दीर्घाणां नाकृते दीर्घे णिलोपस्तु प्रयोजनम्।।3।।[19]

अनिट् पाठ्येत कस्मान्न जातौ झलुत्तरं च तत्।
पृथक् योगः किमर्थो वा इकः कित्त्वं तु सा भवेत्।
ना प्राप्ते तु गुणे दीर्घः णिलोपो बलियान् भवेत्।।4।।

सन्दर्भ

1. पारिभाषेंदुशेखर -114
2. अष्टाध्यायी . 2.4.47
3. इकोझल् सूत्र पर महाभाष्य
4. इकोझल् सूत्र पर भाष्य वार्तिक
5. इकोझल् सूत्र पर भाष्य वार्तिक
6. अष्टा-6.4.16
7. इकोझल् सूत्र पर भाष्य वार्तिक
8. इकोझल् सूत्र पर भाष्य वार्तिक
9. महाभाष्य इकोझल् सूत्र पर
10. इकोझल् सूत्र पर भाष्य वार्तिक
11. अष्टा. -6.4.16
12. इकोझल् सूत्र पर भाष्य वार्तिक
13. अष्टा . - 7.1.100
14. इकोझल् सूत्र पर भाष्य वार्तिक
15. इकोझल् सूत्र पर भाष्य वार्तिक
16. इकोझल् सूत्र पर भाष्य वार्तिक
17. अष्टा। 7.1.54
18. इकोझल् सूत्र पर कारिका
19. इकोझल् सूत्र पर कारिका